

**प्रस्ताव आमंत्रण: आर्काइव्स एंड म्यूजियम्स प्रोग्राम (Archives and Museums programme) |
आईएफए (IFA) × लखनऊ बाइस्कोप - द सिटी म्यूजियम ऑफ कल्चर (Lucknow Bioscope -
The City Museum of Culture) | अंतिम तिथि: 30 नवंबर, 2026**

[इंडिया फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स](#) (IFA), उत्तर प्रदेश के लखनऊ में स्थित लखनऊ बाइस्कोप - द सिटी म्यूजियम ऑफ कल्चर (Lucknow Bioscope - The City Museum of Culture) के सहयोग से अपने आर्काइव्स एंड म्यूजियम्स प्रोग्राम ([Archives and Museums programme](#)) के अंतर्गत क्रिएटिव प्रोजेक्ट्स (Creative Projects) के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। इस कार्यक्रम के दो प्रमुख उद्देश्य हैं। पहला, कला प्रैक्टिशनर्स (practitioners) और रिसर्चर्स (researchers) को ऐसे नए, आलोचनात्मक और रचनात्मक तरीकों पर काम करने का अवसर देना, जिनके माध्यम से आर्काइव्स और म्यूजियम्स में मौजूद सामग्रियों को जनसाधारण के साथ नए तरीके से साझा किया जा सके और जनता का उनसे जुड़ाव बढ़ाया जा सके। दूसरा, इन स्थानों को संवाद, विचार-विमर्श और वैचारिक आदान-प्रदान के सक्रिय मंचों के रूप में विकसित करना।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत पहले पूरी किये गए प्रोजेक्ट्स के बारे में [यहाँ](#) पढ़ें।

लखनऊ बाइस्कोप - द सिटी म्यूजियम ऑफ कल्चर के बारे में

लखनऊ बाइस्कोप - द सिटी म्यूजियम ऑफ कल्चर (Lucknow Bioscope - The City Museum of Culture) का उद्देश्य लखनऊ की समृद्ध, बहुस्तरीय सांस्कृतिक विरासत को खोजना, उसका दस्तावेजीकरण करना और उसका उत्सव मनाना है। इस म्यूजियम की परिकल्पना और विकास के पीछे सनतकदा ट्रस्ट (Sanatkada Trust) का लगभग दो दशकों का वह सतत प्रयास है, जिसके माध्यम से लखनऊ की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और संरक्षित करने का काम किया जाता रहा है। वर्ष 2006 से ही सनतकदा शहर की अमूर्त सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण के लिए सक्रिय है। वर्ष 2010 में ट्रस्ट ने महिंद्रा सनतकदा लखनऊ फेस्टिवल (Mahindra Sanatkada Lucknow Festival) के माध्यम से शहर के मौखिक इतिहास का औपचारिक दस्तावेजीकरण शुरू किया। इस पहल के अंतर्गत ऐसे मंच तैयार किए गए, जहाँ कलाकार, स्कॉलर्स (scholars) और समाज के बुजुर्ग अपनी कहानियाँ, स्मृतियाँ और जीवन के अनुभव साझा कर सकें। कालान्तर में यह महसूस किया गया कि लखनऊ को एक ऐसी समर्पित और स्थायी जगह की ज़रूरत है, जहाँ इन कथाओं और स्मृतियों को केवल समय-समय पर होने वाले उत्सवों और आयोजनों तक सीमित न करते हुए, संरक्षित किया जा सके और जीवंत बनाए रखा जा सके। इसी ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहल के रूप में लखनऊ बाइस्कोप (Lucknow Bioscope) की परिकल्पना की गई। वर्ष 2019 में सनतकदा ट्रस्ट के अंतर्गत इसे एक स्वतंत्र सांस्कृतिक मंच के रूप में औपचारिक रूप से पंजीकृत किया गया। इस परिकल्पना को पहली संस्थागत अभिव्यक्ति तब मिली, जब लखनऊ बाइस्कोप की शुरुआत एक भौतिक म्यूजियम और गूगल आर्ट्स एंड कल्चर मंच पर एक डिजिटल म्यूजियम के रूप में हुई। तभी से म्यूजियम ने अनेक विषय-केन्द्रित प्रदर्शनियों का आयोजन किया है। इनमें *अवध के शिल्प और परिधान*, *लखनऊ के बावर्चीखाने*, *लखनऊ के गली-कूचे*, *हुनर-ए-अज़ा - शोक की हस्तनिर्मित भाषा* और *मलिका-ए-ग़ज़ल - बेगम अख्तर का जीवन और विरासत* जैसी प्रदर्शनियाँ शामिल हैं। हर प्रदर्शनी के लिए आर्काइव्स में संरक्षित तस्वीरों, रिकॉर्ड किए गए साक्षात्कारों, निजी पत्रों, लघु फ़िल्मों और स्थानीय समुदायों की कथाओं का सहारा लिया गया।

संग्रह के बारे में

इस सहयोग के अंतर्गत लखनऊ बाइस्कोप अपना **अवधी आर्काइव** उपलब्ध करा रहा है। वर्ष 2019 से सनतकदा ट्रस्ट ने अवध की शिल्प-विरासत से संबंधित एक व्यापक आर्काइव तैयार करने और उसे संरक्षित करने का काम किया है। वर्तमान में इस आर्काइव और संग्रह में निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध है:

- 2,000 से अधिक पुरानी तस्वीरें, जिनमें परम्परागत शिल्पों, कारीगरों और ऐतिहासिक वास्तुकला को दर्ज किया गया है।
- क्षेत्र के 35 शिल्पों की निर्माण-प्रक्रिया का फोटोग्राफिक दस्तावेजीकरण।
- विभिन्न घरों में सुरक्षित मूल वस्तुओं तक पहुँचा।
- अवध के 25 परिवारों से सीधे प्राप्त पुरखों के समय के पारंपरिक वस्त्रों और रोजमर्रा के कपड़ों का सुव्यवस्थित संग्रह।
- इन शिल्पों से जुड़े परिवारों और कारीगरों के विस्तृत मौखिक इतिहास, डायरी में दर्ज टिप्पणियाँ और साक्षात्कारों की रिकॉर्डिंग।
- आर्काइव के एक हिस्से में लुप्त होती शिल्प-परंपराओं, जैसे चटापटी (कपड़े के अलग-अलग आकार के टुकड़ों को बारीकी से जोड़कर तैयार की जाने वाली एक पारंपरिक पैचवर्क तकनीक जिसमें मछली के शल्क या बर्फी जैसी आकृतियाँ बनती हैं), पर तस्वीरें, वीडियो और लेखों का संग्रह है।
- मिट्टी से बनी मिनिएचर मूर्तियों का संग्रह।
- शहाने लाख की चूड़ियाँ।
- कपड़े को रफू करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले टाँकों से संबंधित सामग्री।
- मुहर्रम के मौके पर इस्तेमाल होने वाले शिल्पों का फोटोग्राफिक और वीडियो दस्तावेजीकरण।
- काम करते हुए कारीगरों की गतिविधियों से उत्पन्न ध्वनियों का ऑडियो दस्तावेजीकरण।
- सनतकदा (Sanatkada) द्वारा प्रकाशित एक कैटलॉग तथा अवधी शिल्पों और पहनावे से संबंधित पुस्तकों का संग्रह।

आईएफए (IFA)–लखनऊ बाइस्कोप क्रिएटिव प्रोजेक्ट्स (Creative Projects) का दायरा

ऊपर उल्लिखित अवधी आर्काइव की सारी सामग्री इन क्रिएटिव प्रोजेक्ट्स (Creative Projects) के लिए उपलब्ध होगी। हम ऐसे लोगों से प्रोजेक्ट-प्रस्ताव आमंत्रित कर रहे हैं, जो आर्काइव में मौजूद सामग्रियों के साथ गहराई से जुड़कर अवध की शिल्प-विरासत को समकालीन सांस्कृतिक विमर्श का हिस्सा बनाना चाहते हैं। इन प्रोजेक्ट्स का उद्देश्य अवध के शिल्पों से जुड़ी कहानियों, तकनीकों और कलात्मक संभावनाओं को ऐसे रचनात्मक माध्यमों से व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाना है, जिनसे लोग सहजता से जुड़ सकें और जिनमें उनकी सक्रिय भागीदारी भी संभव हो। हम ऐसे प्रोजेक्ट-प्रस्तावों की तलाश में हैं, जिनमें अंतर्विषयी (Interdisciplinary) और सहयोगपरक (Collaborative) दृष्टिकोणों तथा कार्य-पद्धतियों के माध्यम से रचनात्मक परिणाम हासिल करने की क्षमता दिखाई देती हो।

हम ऐसे प्रस्तावों को प्रोत्साहित करते हैं, जो:

- आर्काइव्स की सामग्री के गहन अध्ययन और रिसर्च (archival immersion and research) पर केंद्रित हों तथा जिनकी जाँच-पड़ताल का एक स्पष्ट और विशिष्ट विषय हो। मिसाल के लिए, लुप्त होते शिल्प (जैसे चटापटी, रफू, शहाने लाख की चूड़ियाँ, मिट्टी की मिनिएचर मूर्तियाँ) या मुहर्रम से जुड़े शिल्प।
- जो जीवित कारीगरों के साथ मिलकर रचनात्मक कार्य करने और नई कलाकृतियाँ या शिल्प-उत्पाद तैयार करने के लिए, लखनऊ के शिल्प-जगत के कारीगरों के साथ सीधे काम करने में दिलचस्पी रखते हों। उदाहरण के लिए, चिकनकारी, जरदोजी और चटापटी, तीनों शिल्प-तकनीकों को एक ही कृति में संयोजित किया जा सकता है।
- जो रचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करें और कलात्मक अभिव्यक्ति के नए रूपों की परिकल्पना कर सकें। इनके संभावित परिणामों में कलात्मक इंस्टॉलेशन, कलाकृतियों की श्रृंखला और/अथवा प्रदर्शनी शामिल हो सकती है। उदाहरण के लिए, काम करते हुए कारीगरों की ऑडियो रिकॉर्डिंग के आधार पर ध्वनि-केंद्रित प्रस्तुति तैयार हो सकती है या वास्तुकला में इस्तेमाल किये गए रूपांकनों को वस्त्रों के रूपांकनों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जा सकता है।
- जो जन-सहभागिता (public engagement) को बढ़ावा देने और जन-संपर्क पर आधारित कार्यक्रम विकसित करने में रुचि रखते हों। इनमें लखनऊ बाइस्कोप में शिल्प-प्रदर्शन, कार्यशालाएँ, व्याख्यान और शिल्प-भ्रमण (craft walks) जैसे आयोजन शामिल हो सकते हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य संग्रहों को नए संवाद और विचार-विमर्श के जीवंत मंचों के रूप में विकसित करना है।

- जो ज़ीन (zine), प्रकाशन आदि जैसे रचनात्मक माध्यमों के ज़रिये आर्काइव को जीवंत बना सकें। ये प्रकाशन प्रोजेक्ट की रचनात्मक और/अथवा कलात्मक प्रक्रिया पर केंद्रित हो सकते हैं और भविष्य के संदर्भ तथा अध्ययन के लिए संबंधित आर्काइव में सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण बातें

- ऊपर दिए गए उदाहरण केवल सुझाव हैं। आवेदक अपनी रचनात्मक कल्पना और रुचि के अनुसार आर्काइव में उपलब्ध सामग्रियों का किसी भी तरह उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं।
- चुने गए प्रोजेक्ट्स के परिणामों (जैसे प्रदर्शनियों, कलाकृतियों और इंस्टॉलेशन) को सनतकदा ट्रस्ट के लखनऊ बाइस्कोप के परामर्श से आगे विकसित किया जा सकता है। इन रचनाओं को महिंद्रा सनतकदा लखनऊ फेस्टिवल (Mahindra Sanatkada Lucknow Festival) के वार्षिक आयोजन में या देश के विभिन्न हिस्सों में आयोजित होने वाली लुप्त-ए-लखनऊ की भ्रमणशील प्रदर्शनियों के माध्यम से प्रदर्शित किए जाने की भी संभावना है।
- प्रोजेक्ट की पूरी अवधि के दौरान लखनऊ बाइस्कोप संस्थागत सहयोग प्रदान करेगा। इसमें आर्काइव और ज्ञान-संग्रह तक पहुँच, प्रदर्शनी की अवधारणा विकसित करने में सहायता तथा कारीगरों से संपर्क और संवाद स्थापित करने की सुविधा शामिल है।
- चयनित आवेदकों को प्रोजेक्ट की पूरी अवधि के दौरान म्यूजियम और आर्काइव की निर्धारित नीतियों के अनुसार उपलब्ध सामग्रियों तक पहुँच प्रदान की जाएगी।
- शोध के लिए उपलब्ध संग्रहों और सामग्रियों के बारे में अधिक जानकारी के लिए सनतकदा ट्रस्ट की शिल्प क्यूरेटर (Craft Curator) नगमा परवीन से nagmaparveen24@gmail.com पर संपर्क करें।

प्रोजेक्ट की अवधि

प्रोजेक्ट की अधिकतम अवधि 15 महीने होगी।

बजट

- प्रोजेक्ट की कुल लागत 3,00,000 रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- आवेदक पूरी प्रोजेक्ट अवधि के लिए मानदेय (Honorarium) का अनुरोध कर सकते हैं। यह मानदेय प्रस्तावित कुल बजट के 30 प्रतिशत (30%) से अधिक नहीं होना चाहिए। मानदेय सहित प्रोजेक्ट की कुल राशि 3,00,000 रुपये की निर्धारित सीमा के भीतर ही होनी चाहिए।
- अनुदान का उपयोग केवल प्रोजेक्ट से संबंधित खर्चों और गतिविधियों के लिए किया जा सकेगा। भवन, बुनियादी ढाँचे से जुड़े खर्चों या उपकरणों की खरीद के लिए धनराशि नहीं दी जाएगी।

कौन आवेदन कर सकता है?

हम उन म्यूजियम पेशेवरों (museum professionals), क्यूरेटों (curators), डिजाइनरों, रिसर्चरों (researchers), डिजाइन और कला के विद्यार्थियों, कला-शिक्षकों, लेखकों तथा अन्य रचनात्मक प्रैक्टीशनरों (practitioners) से आवेदन आमंत्रित कर रहे हैं जिनके पास रिसर्च (research) के अनुभव के साथ ही, म्यूजियम और आर्काइव में मौजूद संग्रहों के साथ काम करने में गहरी रुचि तथा जनसंपर्क और सार्वजनिक सहभागिता से जुड़े कार्यक्रमों के आयोजन का अनुभव हो।

पात्रता की शर्तें (Eligibility)

- केवल भारतीय नागरिक आवेदन कर सकते हैं। भारतीय मूल के व्यक्ति (PIO) और ओवरसीज सिटिजन ऑफ़ इंडिया (OCI) कार्डधारक इसके पात्र नहीं हैं।
- आवेदक के पास पैन कार्ड होना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, पहचान और भारतीय नागरिकता के प्रमाण के रूप में निम्नलिखित में से कोई एक दस्तावेज़ होना चाहिए - भारतीय पासपोर्ट अथवा आधार कार्ड अथवा भारत में जारी मतदाता पहचान-पत्र
- केवल व्यक्तिगत रूप से आवेदन किया जा सकता है। किसी भी प्रकार का संगठन आवेदन करने के लिए पात्र नहीं है।
- यदि प्रोजेक्ट में दूसरे सहयोगी शामिल हैं, तो उन्हें भी भारतीय नागरिक होना चाहिए।
- जिन व्यक्तियों का आईएफए (IFA) के साथ पहले वित्तीय अनियमितता या बकाया भुगतान का इतिहास रहा है, वे आवेदन नहीं कर सकते।
- जिन व्यक्तियों ने आईएफए (IFA) से पहले प्राप्त किसी अनुदान के अंतर्गत सहमति के अनुसार निर्धारित कार्य या सामग्री जमा नहीं की है, वे पात्र नहीं होंगे।
- जिन व्यक्तियों को आईएफए (IFA) ने किसी भी कारण से भविष्य में आवेदन करने से रोकने संबंधी पत्र जारी किया है, वे आवेदन नहीं कर सकते।
- जो व्यक्ति वर्तमान में आईएफए (IFA) द्वारा संचालित किसी प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं, वे आवेदन के पात्र नहीं हैं।
- एक से अधिक व्यक्ति संयुक्त बैंक खाते के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। यदि उनके पास संयुक्त खाता नहीं है, तो उनमें से केवल एक व्यक्ति मुख्य आवेदक के रूप में आवेदन करे और अन्य व्यक्तियों को प्रोजेक्ट में सहयोगी के रूप में शामिल किया जाए।

आवेदन जमा करने संबंधी दिशा-निर्देश

आप अपना प्रोजेक्ट-प्रस्ताव अंग्रेज़ी सहित **किसी भी भारतीय भाषा** में लिख सकते हैं।

निम्नलिखित सभी सामग्री हमें **एक ही ईमेल** में भेजें:

- ऊपर बताई गई दृश्य और लिखित सामग्रियों के आधार पर विकसित की जा सकने वाले प्रोजेक्ट का संक्षिप्त विवरण। इसमें प्रोजेक्ट की परिकल्पना, दृष्टि, कार्य-पद्धति, शोध एवं रचनात्मक दृष्टिकोण और संभावित परिणामों का उल्लेख होना चाहिए। साथ ही, यह भी स्पष्ट किया जाना चाहिए कि प्रोजेक्ट से किस प्रकार की रचनात्मक प्रस्तुतियों या कलात्मक परिणामों की कल्पना की जा सकती है।
- प्रस्तावित प्रोजेक्ट के परिणामों के आधार पर आयोजित किए जा सकने वाले अन्य जनभागीदारी कार्यक्रमों का संक्षिप्त परिचय।
- प्रोजेक्ट के विभिन्न चरणों और गतिविधियों के लिए निर्धारित **टाइमलाइन** का विवरण।
- विस्तृत बजट।
- आपका बायोडेटा (CV) जिसमें क्यूरेटर (curator), कला-क्षेत्र के प्रैक्टिशनर (practitioner) या रिसर्चर (researcher) के रूप में किए गए किसी एक पूर्ववर्ती प्रोजेक्ट-कार्य का संक्षिप्त विवरण भी शामिल हो।
- आवेदन से संबंधित सभी सामग्री संलग्न फ़ाइलों के रूप में भेजने के बजाय एक ऐसे दस्तावेज़ में उपलब्ध कराई जाए, जिसमें संबंधित सामग्री के लिंक दिए गए हों।

अपना आवेदन भेजने या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए Ritwika Misra से ritwika@indiaifalorg पर संपर्क करें। ईमेल की सब्जेक्ट लाइन (Subject Line) यह होनी चाहिए: **Application for IFA-Lucknow Bioscope Creative Project**

कृपया ध्यान दें कि प्रश्नों का उत्तर केवल सोमवार से शुक्रवार, सुबह 9:30 बजे से शाम 5:30 बजे तक दिया जाएगा।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

- अंतिम आवेदन की तिथि: **30 नवंबर, 2026**
- चयनित आवेदकों के साक्षात्कार: **जनवरी 2027**
- प्रोजेक्ट की शुरुआत **जनवरी 2027** से अधिकतम 15 महीने की अवधि के लिए होगी।

आईएफए (IFA) इस प्रोजेक्ट को आपके साथ सीधे मिलकर कार्यान्वित करेगा और इस दौरान आप प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर (Project Coordinator) के रूप में कार्य करेंगे।

कृपया ध्यान दें कि आईएफए (IFA) एक सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, जहाँ बच्चों सहित प्रत्येक व्यक्ति को सहयोग, सम्मान और सुरक्षा मिले। आवेदक से अपेक्षा की जाती है कि वह इन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हो और हर समय उनका पालन करे।

आर्काइव्स एंड म्यूजियम्स प्रोग्राम (Archives and Museums programme) को टाटा ट्रस्ट्स (Tata Trusts) का सहयोग प्राप्त है।

सादर,

आईएफए टीम